पाठ-बोध

मौखिक

उद्देश्य:- Oral Expression
- recall
- description

क. पंडित शादीराम ने किससे कर्ज़ लिया था? लाला सदानंद

ख. लाला सदानंद ने पत्रिकाएँ देखकर उन्हें क्या सुझाव दिया? कि इनके चित्रकारकर लेख दीजि

ग. 'अगर दो हज़ार लिख देता तो शायद उतने ही मिल जाते' —
इस कथन से मानव-स्वभाव की कौन-सी विशेषता उजागर होती है? असंतोष की भावना

घ. पंडित शादीराम ने अपना कर्ज़ कैसे चुकाया? एलबम बेचकर

लिखित

उद्देश्य:- Written Expression
- reasoning
- connotation
- शीर्षक

M.I.- intrapersonal

क. पंडित शादीराम के लिए एक-एक पैसा मोहर जैसा क्यों था?

ख. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए —

i. लाला सदानंद की भलमनसी के सामने वे आँख न उठा पाते थे।

ii. घोर निराशा ने सभी द्वार बंद कर दिए थे।

iii. रात को आशा, सड़क की धूल की तरह बैठ जाती थी।

iv. मुझे आज हलका होने दीजिए।

ग. इस कहानी के लिए कोई अन्य शीर्षक लिखिए।

मौखिक

क. पंडित शादीराम ने लाला सदानंद से कर्ज़ लिया था।

ख. लाला सदानंद ने पत्रिकाएँ देखकर उन्हें सुझाव दिया कि इनमें से अच्छे-अच्छे चित्र निकालकर एक एलबम बनाएँ और चित्रों के शौकीन किसी व्यक्ति को बेचकर पैसे कमाएँ।

ग. [redacted]। यहाँ मनुष्य की लालची प्रवृत्ति तथा असंतोष की भावना उजागर होती है।

घ. पंडित शादीराम ने चित्रों की एलबम बनाकर बेची। उससे प्राप्त रुपयों से उन्होंने अपना कर्ज़ चुकाया।

लिखित

क. गरीबी के कारण ज़रूरतें पूरी करने के लिए पंडित शादीराम को यजमानों से पैसा उधार लेना पड़ता था। इस दशा में प्रत्येक पैसा उनके लिए मोहर जितना ही मूल्यवान था।

ख. **आशय स्पष्टीकरण—**

i. लाला सदानंद ने पंडित शादीराम को पाँच सौ रुपए दिए थे जिन्हें पंडित जी बहुत समय तक लौटा नहीं पाए। लाला सदानंद ने वे पैसे कभी माँगे भी नहीं। उनकी इस सज्जनता एवं भले स्वभाव से पंडित जी दबे जा रहे थे और कभी आँख उठाकर बात नहीं कर पाते थे।

ii. पंडित जी सब तरह से प्रयत्न कर चुके थे कि उधार लिया रुपया लौटा दें पर अचानक कुछ ऐसा घट जाता कि इकट्ठा किया रुपया खर्च हो जाता। पंडित जी अब बिलकुल निराश हो चुके थे। वे सोच रहे थे कि जीवनभर सदानंद जी का पैसा नहीं लौटा पाएँगे।

iii. पंडित जी दिनभर सोचते रहते कि अभी विज्ञापन के उत्तर में एलबम खरीदने की चिट्ठी आती ही होगी। जिस प्रकार दिन में सड़क पर लोगों के चलने के कारण उड़नेवाली धूल रात को नीचे बैठ जाती है, उसी प्रकार कोई चिट्ठी न आने पर रात को पंडित जी निराश हो जाते कि एलबम कोई नहीं लेगा।

iv. पंडित जी ने लाला सदानंद से कहा कि आज मुझे ऋण का भार उतार लेने दीजिए। मेरे हाथ में पैसे आ गए हैं और मैं आपको ये रुपए अवश्य दूँगा जिससे हलका महसूस करूँ।

ग. 'लाला जी की उदारता'; 'उधार का बोझ'; 'कर्ज़ मुक्ति'; 'मुक्ति-दाता'; इसी प्रकार के शीर्षक छात्रों से बनवाएँ।

ही विकल्प चुनकर ✓ लगाइए—

क. लाला सदानंद कैसे व्यक्ति थे? — ✓ परोपकारी

ख. पंडित जी कर्ज़ अदा करने के लिए बेचैन थे क्योंकि— — ✓ वे किसी का उधार नहीं रखना चाहते थे।

शादीराम ने पैसा-पैसा बचाकर अस्सी रुपए जोड़े क्योंकि— — ✓ वे लाला सदानंद का कर्ज़ चुकाना चाहते थे।